शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'निर्मला' उपन्यास

लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- यथार्थवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:- यथार्थवाद का अर्थ है यथातथ्य चित्रण अर्थात जैसा है वैसा ही चित्रण। असम्भव कल्पनाओं से हटकर जीवन और जगत का स्वाभाविक चित्रण ही यथार्थवाद कहलाता है। यथार्थवाद वस्तु सत्य, युग सत्य और जीवन सत्य को चित्रित करता है और यह चित्रण सत्यानुभूति से प्रेरित होता है। जीवन के यथार्थ को अनुभूति की प्रेरणा से सामने रख देना ही वास्तविक यथार्थवाद है। यथार्थवाद यथातथ्य क्रूर नग्न चित्रण से एक ओर जीवन की विभीषिका का चित्रण करता है तो दूसरी ओर भाव और विचार उत्पन्न करके पाठक के हृदय और मस्तिष्क में आन्दोलन उत्पन्न करता है।

प्रश्न:- आदर्शवाद से आप क्या समझते हैं।

उत्तर:- आदर्शवाद का अर्थ है नैतिक मानदण्डों के अनुरूप चित्रण अर्थात् जैसा होना चाहिए वैसा चित्रण करना। किसी समस्या या घटना का यथातथ्य चित्रण ही पर्याप्त नहीं होता, वरन् लेखक का दायित्व यह भी है कि वह नैतिक मानदण्डों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाली होनी चाहिए। पात्रों के चरित्र में नैतिक मानदण्डों एवं मूल्यों की आधार भूमि होनी चाहिए। अधिकतर लोग आदर्शवाद को कल्पना की ऊँची उड़ान मानते हैं, जिसमें लेखक वर्तमान की विभीषिका से त्रस्त होकर एक स्वप्न लोक का निर्माण करता है। किन्तु यह वास्तविक आदर्शवाद नहीं है। नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना एवं प्रतिष्ठा ही आदर्शवाद का मूल उद्देश्य है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०स० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
19/08/20

दिगंत : भाग-2 काव्य खण्ड

उपशास्त्री शीर्षक - पुत्र-वियोग

अनिवार्य द्वितीय-पत्र कवयित्री - सुभद्रा कुमारी चौहान
राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न :- पुत्र-वियोग शीर्षक कविता का सारांश लिखें।

उत्तर :- दिगंत-भाग-2 के काव्य खण्ड में संकलित 'पुत्र-वियोग' कविता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की एक महत्वपूर्ण रचना है। अपने पुत्र के असामयिक निधन के बाद माँ द्वारा व्यक्त की हुई उसके अन्तर की व्यथा का सफल निरूपण 'पुत्र-वियोग' कविता में हुआ है। कवयित्री माँ अपने पुत्र-वियोग में अत्यन्त भावुक हो उठती है। उसकी अन्तर्चेतना को पुत्र का अचानक विछोह झकझोर देता है। प्रस्तुत कविता में पुत्र के अप्रत्याशित रूप से असमय निधन से माँ के हृदय में व्यापक ताप का हृदय-विदारक चित्रण हुआ है। एक माँ के विषादमय शोक का एकसाथ धीरे-धीरे गहराता और ऊपर की ओर बढ़ता चला जाता है। कविता के अंतिम छन्द में पारिवारिक रिश्तों के बीच माँ-बेटे के सम्बन्ध को आत्म-प्रतीति में स्थायी रूप से परिवर्तित कर देता है। यह माँ की ममता की अभिव्यक्ति का चरमोत्कर्ष है।

कवयित्री अपने पुत्र के असामयिक निधन से अत्यन्त विकल है। उसे लगता है कि उसका प्रिय खिलौना खो गया है। उसने अपने बेटे के लिए सब प्रकार के कष्ट उठाए, पीड़ाएँ झेली है। उसे कुछ हो न जाए, इसलिए उसे हमेशा गोद में लिए रहती थी। उसे सुलाने के लिए लोरियाँ गाकर तथा थपकी देकर सुलाया करती थी। मंदिर में पूजा-अर्चना किया; मिन्नतें माँगी, फिर भी वह अपने बेटे को काल के गाल से नहीं बचा सकी। नियति के आगे किसी का वश नहीं चलता है। कवयित्री की एकमात्र इच्छा यही है कि पलभर के लिए भी उसका बेटा उसके पास आ जाए। वह यह भी कहती है कि मैं उसे अपने सीने से चिपका लेती तथा उसका सिर सहलाकर उसे समझाती। यहाँ

शेष आगे —

कवयित्री की संवेदना उत्कर्ष पर पहुँच जाती है। वह बेटा से कहती है कि भविष्य में वह उसे छोड़कर कभी भी नहीं जाए। अपने मृत बेटे को उक्त बातें कहना उसकी असामान्य मनोदशा का परिचायक है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उसने अपनी जीवित सन्तान को उक्त बातें कहीं हों।

'यह कविता सुभद्राजी के प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' से ली गई है। प्रस्तुत कविता 'पुत्र-वियोग' कवयित्री माँ के द्वारा लिखी गई है तथा 'निराला' की 'सरोज-स्मृति' के बाद हिन्दी में यह दूसरा शोक गीत है।

पुत्र के असमय निधन के बाद तड़पते रह गए माँ के हृदय के दारुण शोक की ऐसी सादगी भरी अभिव्यक्ति है जो सार्वभौम होकर अमिट रूप में काव्यत्व अर्जित कर लेती है। कविता के अंतिम छंद में पारिवारिक रिश्तों के बीच माँ-बेटे के अटूट सम्बन्ध का दर्शन कराता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
19/04/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०– पत्र
निबंध माला – गद्य खण्ड
शीर्षिक – कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता
लेखक – आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

लघु प्रश्नोत्तर –

प्रश्न:- उर्मिला के चरित्र के सम्बन्ध में लेखक का क्या कहना है?

उत्तर:- निबंधकार आचार्य महावीर प्रसाद का कहना है कि उर्मिला का चरित्र कोई साधारण चरित्र नहीं था उन्होंने यहाँ तक कहा है कि उर्मिला का चरित्र कीट-पतंगों का चरित्र नहीं था। वह इतना नगण्य नहीं था कि कवियों का ध्यान उधर नहीं जाता। वह धरती से भी भारी और हिमालय से भी ऊँचा था, किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि राम और सीता का आख्यान लिखने वाले वाल्मीकि, भवभूति और तुलसी जैसे कवियों ने उर्मिला को पर्दे में ही छोड़ दिया। यह उनकी उच्छृंखलता ही थी।

प्रश्न:- महर्षि वाल्मीकि के विचारों के प्रति लेखक का क्या मत है?

उत्तर:- निबंधकार द्विवेदी जी कहना है कि महर्षि वाल्मीकि जी ने उर्मिला की उपेक्षाकर अच्छा नहीं किया, क्योंकि उस नववधु का त्याग-तप अनूठा था। वाल्मीकि ने जनकपुर में केवल एक बार वधु वेश में उर्मिला को दिखाया फिर चुप हो गये। उन्हें वह न तो लक्ष्मण के वन प्रयाण के समय दिखाई पड़ी, न राम की राजगद्दी के उल्लासपूर्ण वातावरण में। वह उन्हें तब भी दिखाई नहीं पड़ी जब उसके पति उसकी बहन और उसके प्राणों से प्रिय पति के अग्रज रामचन्द्र जी वन जाने लगे। वह किस तरह छिन्न मूल लता की तरह भूमि पर लोटकर विलख रही थी. वाल्मीकि को यह भी दिखाई नहीं पड़ा। आचार्य द्विवेदी ने लिखा है कि जिस दिन राम और लक्ष्मण सीता जी के साथ अपने राज को छोड़कर वन जा रहे थे उस दिन भी वाल्मीकि को उर्मिला की याद नहीं आयी। उसकी क्या दशा थी, सो कुछ भी आपने नहीं सोचा। इतनी उपेक्षा क्यों।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुरखसेना, पूर्णियाँ
13/08/20